P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारत जापान संबंधों के बदलते आयाम

सारांश

नई भारत–जापान धुरी हालांकि अभी विकसित हो रही है लेकिन वह इस एक आपसी समझ पर विकसित हो रही है जिसमें यह बात तय है कि इस तरह का कोई भी गठबंधन एशिया की भूराजनीति को आकार देने की क्षमता है वह एक दम उसी तरह से है जैसे एशिया के अगुवा के तौर पर चीन या फिर अमेरिका खड़ा हुआ। दोनों देश लगातार एक–दूसरे के समन्वय और सहयोग से चीन की विस्तारवादी मुहिम को रोक सकते है और उसके भौगोलिक और समुद्री दावों को भी चुनौती दे सकते है। साझेदारी, आपसी लाभ के जरिये मौजूदा शक्ति रिश्ते की पहेली में बदलाव के साथ इस बात की पूरी संभावना है कि एशिया में शक्ति संतुलन को बदल दे।

मुख्य शब्द : भारत, बुलेट ट्रेन, टेक्नोलॉजी जापान, आर्थिक, सामरिक, शक्ति, इत्यादि।

कुमेर सिंह गुर्जर
शोधार्थी,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर, राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

जापान और भारत दोनों में बदलाव की बयार बह रही है, लेकिन द्विपक्षीय संबंधों को और ऊँचे स्तर तक उठाकर फायदों को अनुकूलतम बनाने में इसने अभी तक कोई मदद नहीं की है। इन दो बड़े एशियाई राष्ट्रो को अपने भिन्न मतों को हल करने की तथा एक दूसरे की और इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में योगदान देने की जरूरत है, जबकि वे दो प्रमुख क्षेत्रों मध्य एशिया के आर्थिक विकास में संयुक्त भागीदारी तथा विद्युत उत्पादन के लिए परमाणु ऊर्जा को आगे बढ़ाने में संपूर्ण सहयोग–में किसी प्रकार के सामरिक आर्थिक सहयोग की शुरूआत नहीं कर लेते। इन दोनों ही क्षेत्रों में, इन दो विशाल एशियाई राष्ट्रो को एक–दूसरे की जरूरत है, तथा परस्पर निर्भरता दोनों को जबरदस्त लाभ पहुँचाएगी।

'भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे और उनके सहकर्मियों के लिए इस संदेश के साथ जापान गए कि द्विपक्षीय परमाणु सहयोग आर्थिक रूप से दोनों देशों को लाभ पहुँचाएगा। उन्हें बहुत अधिक सफलता नहीं मिली क्योंकि आबे के नेतृत्व वाली सरकार अभी भी यह असंभव सी उम्मीद लगाए बैठी है कि 1.25 बिलियन लोगों की आबादी व परमाणु संपन्न राष्ट्र भारत या तो व्यापक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि (सीटीबीटी) और / या फिर परमाणु अप्रसार संधि (एपीटी) पर हस्ताक्षर कर देगा।

जापान ने हाल में, देश की वर्तमान और भावी राष्ट्रीय सुरक्षा के कथित फायदे के लिए और साथ ही नए भागीदारों को शामिल कर अपनी अर्थव्यवस्था का विस्तार करने के लिए अपनी खुद की विदेश नीति बनाई।

एशिया महाद्वीप में जापान सबसे समृद्ध मैन्यूफैक्चरिंग हब है। भारत मैन्यूफैक्चरिंग हब के रूप में उभर रहा है, इसके लिए जरूरी है कि वह जापान के साथ बेहतर संबंध बनाए। दूसरी सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जापान को पाले में करने का मतलब है कि वह हिंद महासागर में सैन्य मामलों में भी भारत के लिए काफी कारगर है, क्योंकि वही अकेला हिंद महासागर में चीन को मुंहतोड़ जबाव दे सकता है।

दूसरा सबसे महत्वपूर्ण कारण आर्थिक है। जापान भारतीय बाजार में सामान्य निवेश के अलावा बुनियादी ढाँचा और विकास परियोजनाओं में भी निवेश के लिए उत्सुक है। क्षेत्र में जापान सैन्य साझेदार के रूप में भी भारत के लिए काफी महत्त्वपूर्ण है।

जापान प्रधामंत्री शिंजो आबे जनवरी, 2014 में भारत के गणतंत्र दिवस परेड में मुख्य अतिथि थे। आबे लंबे समय से जापान और भारत के नेतृत्व वाले एक व्यापक एशिया के सृजन के पक्षधर रहे है और उन्होंने प्रधानमंत्री के रूप में अपने पिछले कार्यकाल के दौरान इसको प्रस्तावित भी किया था।

मोदी के तहत जापान के साथ भारत के संबंध आबे के साथ उनके करीबी व्यक्तिगत रिश्तों के चलते अतिरिक्त महत्व हासिल कर लिया।

भारत–जापान के रिश्ते मोदी की यात्रा के दौरान विशिष्ट सामरिक और वैश्विक साझेदारी के उद्घघाटन के साथ परिलक्षित हुए। दोनों देशों के बीच साझेदारी अभिसरण वैश्विक हितों, एक–दूसरे से महत्वपूर्ण समुद्री संबंधों और अंतरराष्ट्रीय जिम्मेदारियों से बढ़ रहा है और (विदेश मंत्रालय 2014) भारत की लुक ईस्ट नीति के दिल में जापान है। जापान अगले पाँच वर्षो में चारों ओर 35 बिलियन डालर भारतीय बुनियादी ढाँचा क्षेत्र में निवेश करने की प्रतिबद्धता जाहिर की है। मोदी की यात्रा ने भारत और जापान के बीच सैन्य संबंधों को बढ़ाने का भी रास्ता दिखाया।

जापान जो कर रहा है वह दरियादिली नहीं, उसकी जरूरत है। भारत को जापान की जितनी जरूरत है, उतनी ही जापान को भी भारत की है। जापान अपनी जीडीपी का 50 प्रतिशत दूसरे देशों में निवेश करता है। चीन से उसके विवाद है। आर्थिक और राजनीतिक रूप से चीन ताकतवर बनता जा रहा है। इसलिए उसने भारत को चुना। भारत–जापान के बीच घोषित प्रोजेक्ट आधुनिक टेक्नोलॉजी पर आधारित है। इनमें निवेश की रकम ज्यादा होगी, पर अधिक लोगों को रोजगार नहीं मिलेगा। उसका लोन भी जापानी मुद्रा येन में होगा। बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट में ज्यादातर काम जापानी कंपनियों को मिलेगा यानी मुख्य कॉन्ट्रेक्टर जापानी कंपनी ही होगी। इस तरह लोन का एक हिस्सा वापस जापान को ही जाएगा। जापान के लिए भारत में आगे निवेश की काफी संभावनाएँ है। मसलन, प्रदूषण को देखते हुए भारत को आगे ज्यादा यूरो मानक वाली गाड़ियों की जरूरत होगी। जापान इसमें मदद कर सकता है। ऐसी टेक्नोलॉजी वाली गाड़ियों में उसे महारथ है। बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट सही मायनों में भारत सरकार के लिए चुनौती है। पहली बुलेट अहमदाबाद से मुंबई के बीच चलनी है। दोनों जगह सत्ता भाजपा के पास है। फिर भी डेडिकेटेड जमीन और बिजली की व्यवस्था मुश्किले खड़ी करेगे।

शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का अध्ययन भारत जापान संबंधों पर केन्द्रित है। प्रस्तुत शोध में विशेषकर भारत–जापान संबंधों के सामरिक एवं आर्थिक आयामो का दृष्टिगत रखते हुए निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये हैः–

1. भारत जापान संबंधों के राजनीतिक आयामों का अध्ययन करना।
2. भारत–जापान के मध्य सामरिक क्षेत्र में सहयोग की बढ़ती महती संभावनाओ का पता लगाना।
3. भारत–जापान की आर्थिक सहयोग के क्षेत्र में की भविष्योन्मुखी सहयोग की नीति खोज करना।
4. भारत–जापान के मध्य सुदृढ़ मित्रता के नवीन आयामों का निर्धारक तत्वों के जानना।
5. चीन की एशिया एवं वैश्विक क्षेत्र में बढ़ती उपस्थिति के संदर्भ में सहयोग के क्षेत्रों का पता लगाना।
6. रूस के पाकिस्तान के प्रति बढ़ते झुकाव के सन्दर्भ में भारत–जापान सम्बन्धों की उपयोगिता
7. उत्तर कोरिया एवं चीन की बढ़ती सामरिक चुनौती के संदर्भ में भारत–जापान सम्बन्धों के विभिन्न पहलुओं का पता लगाना।

नीति लागू करने में मोदी की स्पीड बुलेट ट्रेन जैसी : अबे

भारत दौरे पर दिल्ली पहुँचे जापान के प्रधानमंत्री शिंजो अबे ने बिजनेस लीडर फोरम में अपने बयान की शुरूआत नमस्ते के साथ की। उन्होंने कहा कि नीतियों को अमल में लाने में पीएम मोदी की स्पीड बुलेट ट्रेन की तरह है। मोदी की आर्थिक नीतियाँ शिकानसेन जैसी है–हाई स्पीड, सुरक्षित, भरोसेमंद और बहुत से लोगों को साथ लेकर चलने वाली। पीएम मोदी ने कहा कि जापान वह देश है, जिसने भारत की प्रगति को सबसे करीब से महसूस किया है। जापान के पीएम का स्वागत करते हुए मोदी ने कहा कि वह एक ऐसे व्यक्ति की अगवानी कर रहे है, जिन्होंने भारत–जापान संबंधों का चैपिंयन करार दिया। मोदी ने जापान के साथ मिलकर जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में काम करने का भी भरोसा दिलाया।

भारत दूसरा खरीददार

जापान पहला देश था, जिसने हाईस्पीड ट्रेनो के लिए विशेष रेल्वे लाईन शिकान्सेन (नई ट्रंक लाईने है) बनाई थी। जापान यह तकनीक कई देशों को बेचने की कोशिश कर रहा है लेकिन हाल ही में उसने इंडोनेशिया में चीन के हाथो मात खाई है। अब तक जापान ने अपनी बुलेट ट्रेन तकनीक सफलतापूर्वक ताईवान को बेची है। भारत इसे खरीदने वाला दूसरा देश है।

मोदी ने दोहराया नेहरू का बनाया इतिहास

मोदी ने काशी में प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का का कारनामा दोहराया है। नेहरू ने 25 जनवरी 1961 को ब्रिटेन की महारानी एजिलाबेथ को काशी लाकर जैसा सम्मान दिया था, मोदी ने वैसा ही सम्मान आबे को बनारस लाकर दिया है। नेहरू एलिजाबेथ को काशी के जिन स्थानों को दिखाने ले गए थे। मोदी भी शिंजो को उन अधिकांश जगहों पर ले गए। शिंजो के रेड कार्पेट ग्रैड वेलकम को देखकर पुराने लोगों को ब्रिटेन की महारानी के दौने की यादें ताजा हो गई।

सुरक्षा परिषद में बदलाव हो

दोनों देशों के नेताओं ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में बदलाव को लेकर भी चर्चा की। मोदी ने जापानी नागरिकों को 1 मार्च, 2016 से वीजा ऑन अराइवल की सुविधा दिए जाने की भी घोषणा की।

परमाणु करार समेत कई समझौते

दोनो देशों के बीच असैन्य परमाणु, ऊर्जा, सुरक्षा, आधारभूत ढाँचे, तकनीक, शिक्षा आदि को लेकर भी करार हुआ। मोदी ने कहा कि परमाणु करार सिर्फ स्वच्छ ऊर्जा को लेकर किया गया करार नहीं है बल्कि यह आपसी भरोसे के नए स्तर पर पहुँचने का भी प्रमाण है। बनारस में इंटरनेशनल कॉन्फ्रेन्स हॉल स्थापित होगा। जापान ने भारत में अगले पाँच साल में 35 अरब डॉलर यानी करीब 2,34,500 करोड़ रू. का निवेश करने का फैसला लिया है।

उल्लेखनीय है कि भारत जापान के मध्य अच्छे संबंध भविष्य के लिए हितकर है।

निष्कर्ष

जापान के साथ मित्रता भारत के हित में है। जापान के पास टेक्नोलोजी और भारत के पास मानव शक्ति अतः दोनो देश मिलकर विकास की नई गाथा

लिख सकते है। जापान एशिया मे महत्वपूर्ण भूमिका रखता है तथा भविष्य मे भारत का बेहतरीन मित्र साबित होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

वर्ल्ड फोकस दिसम्बर 2015 पृष्ठ संख्या 102

राजस्थान पत्रिका 13 दिसम्बर, 2015 पृष्ठ 20

टोकोनोरी होरीमोटो : 'सिंकरोनाइजिंग जापान इंडिया रिलेशन' जापान क्वार्टरली वॉल्यूम 40 अंक 1 जन, मार्च, 1993

एस. जयशंकर : 'इंडिया जापान रिलेशन ऑफ्टर पोखरण 2 सेमिनार अंक 487 मार्च 2000